विश्व सम्राट ब्लैक ड्रैगन

डबल सीक्रेट एजेन्ट 00½

राम-रहीम

विश्व सम्राट ब्लैक ड्रैगन

-चित्रांकन-
त्रिशूल कॉमिको

-लेखक-
बिमल चटर्जी

पिछले अंकों 'सिरफिरा वैज्ञानिक' और 'विनाश के बादल' में आपने पढ़ा कि एक सिर फिरे वैज्ञानिक ब्लैक ड्रैगन ने
भारत के एक प्रसिध्द वैज्ञानिक प्रो॰ प्रदीप शर्मा की बेटी का एक ह्वेल रूपी पनडुब्बी द्वारा अपहरण कराने के साथ-
साथ प्रोफेसर शर्मा का भी एक समुद्री जहाज समेत अपहरण करवा लिया, लेकिन योजना के मुताबिक राम-
रहीम भी प्रोफेसर के साथ-साथ मुजरिम ब्लैक ड्रैगन के समुद्र के गर्भ में बने स्टेशन जीरो में पहुंचने में सफल हो
गये। किन्तु जल्दी ही उनका भेद ब्लैक ड्रैगन पर खुल गया। तब ब्लैक ड्रैगन ने प्रो॰ शर्मा का मस्तिष्क एक वैज्ञानिक
पध्दति से अपने अधिकार में करने के बाद, दिन के समय सूर्य को विनाश के बादलों के पीछे छुपाकर दिन को रात
करके, राम-रहीम को अपनी वैज्ञानिक शक्ति का एक और नमूना दिखाया। साथ ही साथ उस आश्चर्य-
जनक आविष्कार को दिखाकर ब्लैक ड्रैगन ने भारत सरकार को यह धमकी भी दी कि एक माह के भीतर-
भीतर वह उसे भारत का एकमात्र शासक घोषित कर दे, वरना वह पूरे हिन्दुस्तान को श्मशान भूमि में
बदल देगा। उसके इस आविष्कार का रूप कुछ इतना भयानक था कि टी॰वी॰ पर उसे देखकर राम-रहीम की
रूहें तक कांप उठीं और वे शीघ्र से शीघ्र ब्लैक ड्रैगन का सिर कुचलने का उपाय सोचने लगे। आगे क्या
होता है, यह प्रस्तुस्त चित्रकथा में पढ़ें—

एजेण्ट जैड और सैनिकों ने राम-रहीम को ले जाकर कैद-खाने की उसी कोठरी में डाल दिया, जिसमें पहले उन्हें रखा गया था। उनकी निगरानी के लिये दो पहरेदार रखे गये थे, जिनमें से एक हर समय द्वार पर ही डटा रहता था और दूसरा गैलरी में गश्त लगाता रहता था। द्वार पर डटे पहरेदार के पास ही उस कोठरी के ताले की चाबी थी।

किसी चीज की जरूरत हो तो इन पहरेदारों से मांग लेना, लेकिन सावधान, किसी किस्म की चालाकी दिखाने का प्रयत्न न करना, वरना ये दोनों पहरेदार बेहद ही निर्मम और वहशी किस्म के इन्सान हैं। हाथ-पैर तोड़ने में ये जरा भी दया नहीं करेंगे।

राम-रहीम ने कोई जवाब नहीं दिया।

उसके जाने के बाद राम और रहीम खामोशी से अपने-अपने पलंगों पर बैठे काफी देर तक कुछ सोचते रहे, फिर रहीम ही सर्वप्रथम व्याकुलता से बोला—
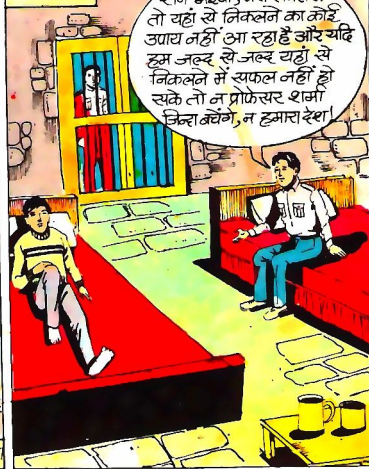
लेकिन राम ने उसकी बात का कोई जवाब नहीं दिया। पूर्ववत् चुपचाप बैठा कुछ सोचता रहा। यह देख रहीम बुरी तरह झुंझला उठा–
भइया, क्या तुम इसी तरह उदास की तरह मुंह लटकाए बैठे रहोगे या कुछ बोलोगे भी? कहीं तुम गूंगे और बहरे तो नहीं हो गये?
शायद, यदि मेरी मानो तो तुम भी कुछ देर के लिये गूंगे और बहरे हो जाओ और गश्त लगा रहे पहरेदार को देखकर यह अंदाजा लगाओ कि वह इधर आने और दूसरी तरफ जाने में कितना समय लगाता है!
क्या मतलब?
मतलब यह छोटे भाई कि इस बात पर नजर रखो कि वह दूसरा पहरेदार कितने सैकेण्ड या मिनट के बाद हमारी कोठरी के सामने से गुजरता है और वापस लौटता है!
ओह! परन्तु यह जानकर तुम क्या करोगे?
यह भी बता दूंगा, लेकिन तुम उसे वाच करो!
ठीक है!
और दोनों मुंहजबानी ही उस पहरेदार के आने-जाने का समय नोट करने लगे, क्योंकि उनकी कलाई घड़ी, जो कि वाच ट्रांसमीटर का भी काम देती थी, पहले ही तलाशी के दौरान कलाई से निकाल ली गई थी।
कुछ समय बाद–
उसे यहां से गुजरने में ठीक एक मिनट लगता है और वापस लौटकर गुजरने में एक मिनट दस सैकेण्ड!
गुड! यही मेरा भी अनुमान है!
आखिर तुम करना क्या चाहते हो? मुझे भी तो बताओ!
मैं यहां से निकलने की योजना बना रहा हूं!
वह तो मैं भी समझ रहा हूं, लेकिन वह योजना भी तो बताओ!
उत्तर में राम कुछ कहने ही जा रहा था कि दो सैनिक खाना लेकर आते दिखाई दिये।
सत्यानाश! इन मरदूदों को भी अभी आना था!
कोई बात नहीं, भोजन करने के बाद अपनी योजना पर अमल करेंगे।
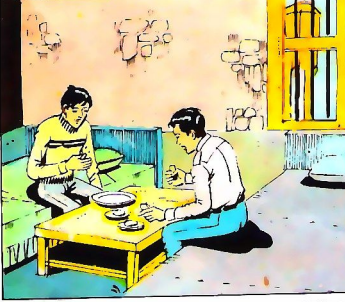
जब वे भोजन कर चुके तो सैनिक बर्तन आदि उठाकर चले गये, लेकिन इसी के साथ राम की सारी योजना गड़बड़ हो गई, क्योंकि दोनों पहरेदारों की ड्यूटी बदल गयी थी।

मास्टर का कहना है कि ये दोनों काफी खतरनाक छोकरे हैं, अतः सावधान रहना! यह लो इनकी कोठरी की चाबी!

ठीक है, तुम चिन्ता मत करो!

और राम-रहीम फिर नये सिरे से कुछ सोचने पर विवश हो गये।

इधर दूसरे दिन सुबह के लगभग ग्यारह बजे प्रो॰ शर्मा की प्रयोगशाला से ठीक बीस किलोमीटर दूर आकाश में एक हैलिकाप्टर प्रकट हुआ और अपनी यथागति से प्रोफेसर शर्मा की प्रयोगशाला की ओर बढ़ा।

वह ब्लैक ड्रैगन की एक रेड फोर्स का विशेष हैलिकाप्टर था।

अगले ही पल लड़ाकू विमान चालक ने हैलिकाप्टर के चालक से सम्पर्क जोड़ा—

हैलो पायलट, मैं कैप्टन भटनागर बोल रहा हूं। तुम अपना हैलिकाप्टर निषेध क्षेत्र में क्यों लाये और प्रयोगशाला के इर्द-गिर्द क्यों मंडरा रहे हो?

सॉरी कैप्टन! मैं आने से पहले आपको सूचित करना भूल गया। दरअसल हमें स्वास्थ्य विभाग की ओर से प्रयोगशाला के आस-पास कीट-नाशक दवा छिड़कने के लिये भेजा गया है...
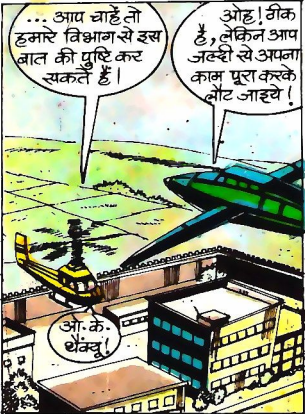
लड़ाकू विमान के चालक कैप्टन भटनागर ने वायरलेस द्वारा हैलिकाप्टर के उद्देश्य की खबर नीचे सुरक्षा गार्ड के असिस्टेंट इंचार्ज कैप्टन नायक को दी और वापस लौट गया। जबकि हैलिकाप्टर चालक और उसके साथी ने निश्चिंता की सांस ली।

...खैर, अब समय नष्ट मत करो और हैलिकाप्टर को निचाई पर ले जाकर अपना काम शुरू करो!
अभी लो दोस्त!
और शीघ्र ही हैलिकाप्टर काफी नीची उड़ान भरता हुआ प्रयोगशाला के इर्द-गिर्द कोई गैस छोड़ने लगा।
उफ! पता नहीं कैसी कीटनाशक दवा छिड़क रहे हैं। काफी विचित्र गंध है।
मेरा तो सर चकरा रहा है सर!
कहने के साथ ही कैप्टन नायक चकराकर धरती पर गिर पड़ा।
ओह! यह तो बेहोश हो गया है!
तभी कर्नल पर भी बेहोशी-सी छाने लगी।
ओह, धोखा! हैलिकाप्टर से बेहोश करने वाली गैस छोड़ी जा रही है!
किसी तरह अपने होश-हवास काबू में रखता हुआ कर्नल केबिन की ओर दौड़ा।
खतरे का अलार्म बजा दूं। साथ ही हैडक्वार्टर को भी सूचित करना होगा!
केबिन में पहुंचकर सबसे पहले कर्नल ने खतरे का अलार्म बजाया।
ट-न्--न्--न्--
कूं--कूं--कूं--
होशियार! कोई खतरा प्रयोगशाला पर मंडरा...
लेकिन खतरे का अलार्म सैनिकों को बेहोश होने से न रोक सका।
आह!
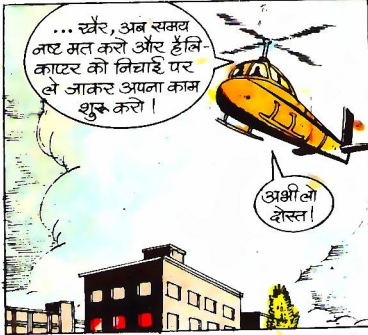
प्रयोगशाला के चारों ओर तैनात सैनिक एक-एक करके बेहोश होते चले गये।
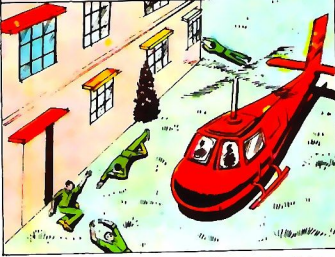
जबकि कर्नल भूषण किसी तरह अब भी अपने होशो-हवास सम्भाले ट्रांसमीटर सैट पर हैडक्वार्टर को सूचित कर रहा था।
मेरे होशो-हवास जवाब देते जा रहे हैं। पता नहीं सुरक्षा गार्ड इस समय किस स्थिति में... अ... आप तुरन्त कार्यवाही कीजिये... व... वह... हैलिकाप्टर...।

हैलो-हैलो, कर्नल! क्या हुआ? बोलिये-बोलिये!
आह!

लेकिन कर्नल और कुछ नहीं बोल सका। वह बेहोश होकर लुढ़क चुका था।
हैलो-हैलो, कर्नल...!
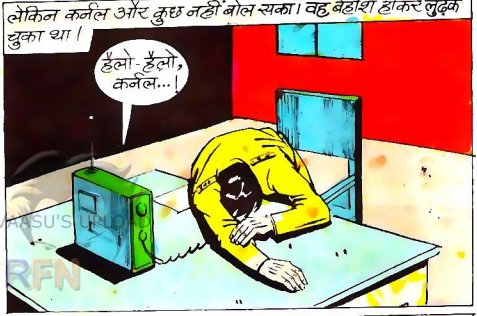
हैडक्वार्टर में—
सम्पर्क चालू है, लेकिन कर्नल की ओर से कोई जवाब नहीं आ रहा!
शायद वे भी बेहोश हो गये होंगे! हमें तुरन्त इसकी खबर सिक्योरिटी कमांडर को करनी चाहिये

इधर सभी सुरक्षा सैनिकों के बेहोश होकर लुढ़कते ही हैलिकाप्टर प्रयोगशाला के प्रांगण में उतर चुका था।
हमें दस मिनट के भीतर-भीतर प्रोफेसर के रीडिंग रूम से फार्मूले के कागजात उड़ाकर निकल भागना है, वरना सारी योजना गड़बड़ हो जायेगी!
चिन्ता मत करो। यह काम हम सात मिनट में ही पूरा कर लेंगे।

इमारत के भीतर पहुंचकर—
इमारत के भीतरी नक्शे के मुताबिक प्रोफेसर का रीडिंग रूम उस तरफ होना चाहिए!
तो जल्दी चलो! इस समय हमारा एक-एक क्षण कीमती है!
शीघ्र ही वे प्रोफेसर शर्मा के रीडिंग रूम में पहुंचने में सफल हो गये।
इस अलमारी के पीछे ही वह गुप्त सेफ होनी चाहिये, जिसमें फार्मूला रखा है!
उस फूलदान को घुमाओ!
दूसरे व्यक्ति ने जैसे ही उस फूलदान को एक तरफ घुमाया, किताबों से भरी अलमारी दूसरी ओर घूम गयी और वहां दीवार में बनी एक बड़ी-सी सेफ दिखाई देने लगी।
यही है वह सेफ! जल्दी से मास्टर 'की' निकालो!
अभी लो!
फिर मास्टर 'की' द्वारा सेफ खोलने में भी उन्हें कुछ क्षणों से अधिक समय नहीं लगा।
इसमें तो बहुत-सी फाइलें और दस्तावेज रखे हैं! अब यह कैसे पता चलेगा कि इनमें फार्मूले के कागजात कौन-से हैं?
सारे कागजातों और फाइलों को बैग में भर लो! मास्टर स्वयं प्रोफेसर से जरूरी कागजात निकलवा लेंगे।
दूसरे व्यक्ति ने झटपट सारे दस्तावेजों और फाइलों को एक बड़े से थैले में भरना आरम्भ कर दिया।
सेफ को पूरी तरह साफ करने के पश्चात् दोनों पुनः बाहर की तरफ दौड़ पड़े।
इस सारे काम में उन्हें मुश्किल से छः मिनट लगे थे।
शुक्र है, अभी तक कोई खतरा पेश नहीं आया!
शायद!
अगले कुछ ही क्षणों में वे हैलिकाप्टर के भीतर थे।
अब जल्दी से हैलिकाप्टर को स्टार्ट करके ऊपर उठाओ और डायमण्ड हार्बर की ओर चलो! सुरक्षा गार्डस के होश में आने में केवल तीन मिनट शेष रह गये हैं!
चिन्ता मत करो! अब सुरक्षा गार्डस हमारा क्लयू भी नहीं पा सकेंगे!
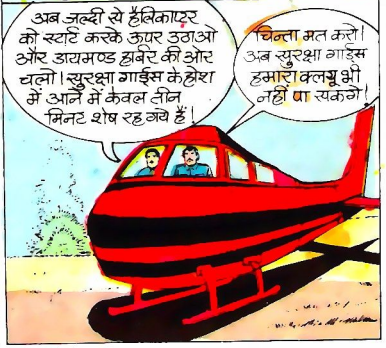
और अगले क्षण-
लेकिन तभी-
ओह! आखिर खतरा पीछे लग ही गया! तुम फौरन हैलिकाप्टर को पूरी गति देकर समुद्र की ओर उड़ाओ!
लेकिन लड़ाकू विमानों की गति को मात देना मुश्किल है!
उफ! तुम कोशिश तो करो!
हैलिकाप्टर चालक ने लड़ाकू विमानों से पीछा छुड़ाने की पूरी कोशिश की, लेकिन वह इसमें सफल नहीं हो सका!
उन्होंने हमें चारों ओर से घेर लिया है!
डॉज देने के लिये धुएं का गोला दागो!
उसी समय भारत के लड़ाकू विमानों से चेतावनी दी जाने लगी!
सुनो हैलिकाप्टर सवारो! तुम लोग जो कोई भी हो, तुरन्त अपने हैलिकाप्टर को नीचे उतारो, वरना तुम्हें मार गिराया जायेगा!
तभी हैलिकाप्टर की ओर से एक धमाका हुआ!
धड़ाम्
और इसी धमाके के साथ हैलिकाप्टर के चारों ओर तेजी से गाढ़ा धुआँ फैलने लगा!
अगले ही पल-
ओह! हैलिकाप्टर तो धुएं के बादलों में छिप गया!
समझ में नहीं आता कि यह धुएं का बम उन्होंने क्यों छोड़ा?
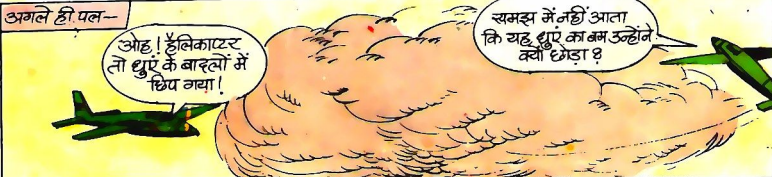
सभी लड़ाकू विमानों के चालक हैलिकाप्टर को धुएं के बादलों के बीच ओझल होते देख असमंजस में पड़ गये, लेकिन फिर—
अटैक!
फायर!
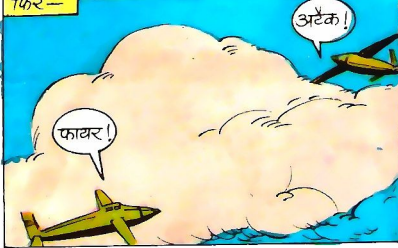
तुरन्त सभी विमानों से धुएं के गुबार पर गोलियों और राकेटों की वर्षा की जाने लगी।
तड़-तड़-तड़-
धुड़म-धड़ाम
शू-शू-शू-

पता नहीं विमानों से की गई गोलाबारी किसे लगी, लेकिन शीघ्र ही जब हैलिकाप्टर के इर्द-गिर्द छाया धुएं का गुबार छंटा तो सभी लड़ाकू विमानों के चालक और सहयोगी बुरी तरह बौखला उठे।
अरे, हैलिकाप्टर कहां गायब हो गया?
ओह! शायद हैलिकाप्टर हमें धुएं का चकमा देकर भाग निकलने में सफल हो गया!
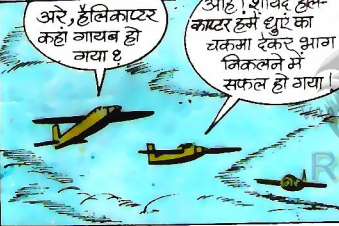
जब स्वयं उस आपरेशन के इंचार्ज विंगकमांडर मि॰ पुरी की समझ में कुछ नहीं आया तो उसने अपने विमान के पायलट को आदेश दिया—
मि॰ माण्टो, हैडक्वार्टर को सारी स्थिति की रिपोर्ट देने के साथ-साथ सभी पायलटों को निर्देश दो कि वे चारों तरफ फैलकर हैलिकाप्टर की तलाश करें!
यस सर!

सभी पायलट चालक चारों तरफ फैलकर हैलिकाप्टर की खोज करें! वह जहां कहीं भी दिखाई दे, उसे तुरन्त मार गिराया जाये!
ओ॰के॰!

सभी विमानों ने चारों ओर फैलकर हैलिकाप्टर की तलाश करनी आरम्भ की, लेकिन उनमें से किसी के हाथ भी सफलता नहीं लगी।
हमें हैलिकाप्टर कहीं नजर नहीं आया सर!
मजबूरी है, वापस लौटो!
उस हैलिकाप्टर का कहीं कोई पता नहीं चला सर!
और सभी निराश होकर एयरपोर्ट की ओर वापस लौट पड़े।
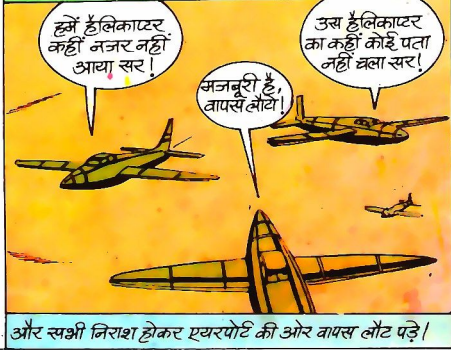
उधर हैलिकाप्टर लड़ाकू विमानों को चकमा देकर उड़ता हुआ हिन्द महासागर के ऊपर पहुंचा।
यही है वह स्थान, जहां हमें रिसीव किया जाना है। डैथशिप को काल करो।
ओ·के· डियर।

अगले ही पल —
हैलो-हैलो डैथशिप, नम्बर थर्टी कालिंग फ्रॉम रेड फोर्स आपरेशन — हैलो-हैलो!

तुरन्त ही समुद्र का सीना फाड़ती हुई वह ह्वेलनुमा पनडुब्बी पानी से बाहर निकली—
हैलो आपरेशन रेडफोर्स, हम तुम्हें रिसीव करने के लिये तैयार हैं, लैंड करो!

इसके साथ ही ह्वेलनुमा पनडुब्बी का विशाल मुंह खुल गया।
चलो, हैलिकाप्टर को भीतर ले चलो!
ओ·के· फ्रेण्ड!

अगले ही पल हैलिकाप्टर नीचे झुककर ह्वेल के मुंह की ओर बढ़ा।

देखते-ही-देखते...
...हैलिकाप्टर समूचा का समूचा ह्वेल के मुंह में समा गया।

हैलिकाप्टर के भीतर पहुंचते ही ह्वेलनुमा पनडुब्बीने अपना विशाल मुंह बंद किया और पानी में डुबकी लगा गयी।

ह्वेलनुमा पनडुब्बी के भीतर—
मिशन का क्या रहा नम्बर थर्टी!
लगभग कामयाबी!

लगभग कामयाबी से तुम्हारा मतलब?
प्रोफेसर की गुप्त सेफ में एक नहीं बहुत से कागजात और फाइलें थीं, इसलिये हम सारी ही सेफ साफ कर लाये। मुझे विश्वास है उनमें से एक दस्तावेज जरूर फार्मूले का होगा।

ईश्वर करे ऐसा ही हो, वरना तुम दोनों की खैर नहीं!
खैर, छोड़ो इन बातों को। आओ कन्ट्रोल रूम में चलें।

कुछ देर बाद वह विशाल व्हेलनुमा पनडुब्बी स्टेशन जीरो के साथ जा जुड़ी।
हमारा काम खत्म हुआ। तुम दोनों स्टेशन में जाओ। मास्टर तुम्हारी प्रतिक्षा कर रहे हैं!
ठीक है।

नम्बर थर्टी और उसका साथी शीशे के पाईप से होते हुए स्टेशन जीरो की ओर बढ़ चले।

पाईप से निकलकर एक विशेष कमरे में पहुंचते ही—
वैलकम माई डियर फ्रेन्ड्स। मिशन की कामयाबी पर बधाई स्वीकार हो!
थैंक्यू मि० जैड! क्या हम इसी समय बॉस से मिल सकते हैं?

जरूर! आओ, वे तुम्हारा ही इन्तजार कर रहे हैं!

एजेण्ट जैड जब उन्हें ब्लैक ड्रैगन के पास लेकर पहुंचा तो वहां प्रोफेसर शर्मा और उनकी बेटी भी मौजूद थे।
सिनूर की जय हो!
लो प्रोफेसर, तुम्हारे महान आविष्कार के दस्तावेज आ गये!

शायद ब्लैक ड्रेगन को पहले से ही यह मालूम हो गया था कि उसकी रेड फोर्स के एजेण्ट वास्तविक फार्मूले के दस्तावेज की पहचान नहीं कर पाये हैं। तभी तो—
थैला इस मेज पर उलट दो!
यस मास्टर!

नम्बर थर्टी ने थैला मेज पर उलट दिया।
प्रोफेसर! इन कागजातों और फाइलों में से अपने आविष्कार के दस्तावेजों को उठा लो!

यही हैं मेरे नये आविष्कार के कागजात। अब मैं अपना काम बाखूबी कर सकूंगा!
गुड! तुम्हारी प्रयोगशाला भी बिल्कुल तैयार कर दी गई है। मैं चाहता हूं कि तुम आज से ही अपने आविष्कार पर जुट जाओ!

बहुत अच्छा महान ड्रेगन! आओ बेटी! मैं चाहता हूं, तुम भी मेरे कार्य में मेरी सहायता करो!
चलो डैडी, आपका साथ देकर मुझे भी अत्यधिक प्रसन्नता होगी!

प्रोफेसर शर्मा और उनकी बेटी लता के जाने के बाद ब्लैक ड्रेगन एक भयानक अट्टहास लगा उठा—
हा-हा-हा-एजेण्ट जैड, अब वह दिन दूर नहीं, जब मैं विश्व सम्राट कहलाऊंगा और उस समय मैं इतना शक्तिशाली होऊंगा कि भगवान भी मेरे सामने सर झुका देगा। इन्सान के जीवन और मृत्यु मेरे हाथों में होंगे, केवल मेरे हाथों में!

इधर प्रोफेसर शर्मा की प्रयोगशाला में जो घटना घटी, उसने पूरे हिन्दुस्तान में हंगामा मचा दिया। पूरी सरकारी मशीनरी बुरी तरह बौखला उठी।
मैं पूछता हूं कि आखिर इतनी गार्द के रहते हुए भी यह सब कैसे हुआ?
सर, हमारी सुरक्षा गार्द उनकी योजना से धोखा खा गई...

...यह सपने में भी नहीं सोचा जा सकता था कि अपराधी प्रोफेसर की प्रयोगशाला में चोरी करने के लिये यह मार्ग अपनायेंगे!
बड़े अफसोस की बात है कि जो बात आप लोग नहीं सोच सके, वह अपराधियों ने सोच ली...

...जिस बात की पहले से ही आशंका थी, जब आप लोग उसी की हिफाजत नहीं कर सके तो भला उसकी हिफाजत क्या कर सकेंगे, जिसके बारे में आप लोगों को मालूम ही नहीं होगा!

तभी चीफ मुखर्जी, जो स्वयं भी उस मीटिंग में शामिल थे, कुछ सोचकर बोल उठे—
सर, अपराधी जो कोई भी है, मुझे पूरा विश्वास है उनका हाथ प्रोफेसर के अपहरण के पीछे भी है। साथ ही साथ उनका सम्बन्ध ह्वेलनुमा विचित्र पनडुब्बी के साथ भी जुड़ा हुआ है!
यह बात तो अब एक बच्चा भी कह सकता है मि. मुखर्जी, आपने क्या नई बात कह दी!
यह बात नहीं है सर! दरअसल मैं आपको कुछ और ही कहना चाहता हूं।
क्या कहना चाहते हैं आप, जो कुछ भी कहना चाहते हैं साफ-साफ कहिये। मैं पहेली बुझाना नहीं चाहता!
सर, यदि हम किसी तरह अपराधियों की उस ह्वेलनुमा पनडुब्बी को नष्ट करने में सफल हो जायें तो अपराधी को एक करारी चोट पहुंच सकती है और वह बौखलाकर अपने बिल से बाहर निकल सकता है!
आप कैसी बच्चों जैसी बातें कर रहे हैं मिस्टर मुखर्जी! अव्वल तो उस चीज को खोज निकालना ही काफी मुश्किल काम है...
...और यदि उसे खोज भी लिया जाये तो उसे नष्ट करना कैसे सहज होगा? अब तक की जो रिपोर्ट प्राप्त हुई है, उसके अनुसार वह पनडुब्बी किसी ऐसी धातु की बनी हुई है कि उस पर किसी भी हथियार का प्रभाव नहीं पड़ता...
वह शायद पानी से बाहर निकलने पर अपने आपको ऐसी किरणों के जाल में सुरक्षित कर लेती है, जो बाह्य रूप से किसी भी वस्तु को अपने से टकराने नहीं देती। यह भी उस सिर फिरे अपराधी वैज्ञानिक का एक चमत्कार है!
मैंने उस पनडुब्बी को सामने लाने और उसे नष्ट करने का एक उपाय भी सोचा है सर!
???
!!!
क्या है वह उपाय?
तब चीफ मुखर्जी उन्हें विस्तारपूर्वक अपनी योजना समझाने लगे। जब वे चुप हुए—
आपकी योजना तो वाकई में बहुत अच्छी है मि. मुखर्जी, लेकिन यदि चोट से क्रोधित होकर उसने हमारे देश पर आक्रमण कर दिया तो?
मुझे विश्वास है सर, वह ऐसा नहीं करेगा...
...क्योंकि ऐसे अपराधी, जो विश्व पर राज्य करने का सपना देखते हैं, मानसिक रूप से बहुत विक्षिप्त रहते हैं और हमेशा अपनी शक्ति के घमण्ड में चूर रहते हैं। तभी तो उसने हमें एक माह का समय दिया है...

...मुझे विश्वास है सर कि इसी घमण्ड में वह इस चोट की परवाह न कर पूरे एक माह तक हमारे देश द्वारा घुटने टेक देने की प्रतिक्षा करेगा!
हुम्म!

गृहमंत्री ने कुछ देर सोचा, फिर बोले—
हालांकि इस योजना में काफी खतरा है, फिर भी हम आपकी योजना को मंजूर करते हैं। आप जाइये और अपनी योजना पर कार्य आरम्भ कीजिये। आप जिस फोर्स से जैसी मदद चाहेंगे, आपको मिल जायेगी!
थैंक्यू सर!

फिर सभी आफिसर्स को आवश्यक निर्देश एवं आदेश देने के बाद गृहमंत्री ने मीटिंग बर्खास्त कर दी।

अगले दिन सुबह देशभर के तमाम समाचार-पत्रों में एक खबर मुख्य सुर्खियों में छपी थी।
दैनिक त्रिशूल
अमेरिका द्वारा भारत को यूरेनियम की पहली खेप रवाना।
अमेरिका से यूरेनियम से भरा एक जहाज रवाना।

लगभग संध्या के समय यह समाचार ब्लैक ड्रेगन के विशेष एजेण्ट डॉन ने भी पढ़ा।
यूरेनियम से लदा हुआ जहाज कल सुबह ही भारत पहुंचने वाला है...

...बॉस के लिये यह सूचना बहुत ही अहम होगी। कम्बख्त यह अखबार पढ़ने का समय भी अब मिला। खैर, बॉस को इसी वक्त खबर करनी चाहिये!

अगले ही पल डॉन एक गुप्त स्थान से एक शक्तिशाली ट्रांसमीटर निकालकर अपने बॉस से सम्बन्ध स्थापित करने की कोशिश कर रहा था।
हैलो - स्टेशन जीरो, डॉन कालिंग... हैलो... हैलो... स्टेशन जीरो...

शीघ्र ही स्टेशन जीरो से सम्पर्क जुड़ा।
यस मि. डॉन, मैं स्टेशन जीरो से एजेण्ट जैड बोल रहा हूं। कृपया अपना मैसेज दीजिये।

मेरे पास बॉस के लिये एक बहुत ही महत्वपूर्ण सूचना है और मैं चाहता हूं, वह सूचना मैं उन्हें अपने मुख से दूं।
ठीक है, तुम ठीक ग्यारह बजे डायमंड हार्बर पहुंच जाओ। मैं मास्टर को भी सूचित किये देता हूं। डेथ शिप तुम्हें रिसीव कर लेगा।

डॉन ने ट्रान्समीटर सैट ऑफ करके यथा-स्थान रखा और जल्दी-जल्दी कपड़े बदलने लगा।

और जब डॉन अपने निवास स्थान से कार में सवार होकर डायमंड हार्बर की ओर रवाना हुआ, तब तक सांझ ढल चुकी थी।
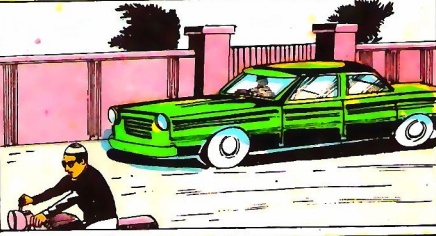
रात्रि के लगभग साढ़े ग्यारह बजे डायमंड हार्बर पर पहुंचकर डॉन ने एक स्टीमर किराये पर लिया और उसे स्टार्ट कर बीच समुद्र की ओर रवाना हो गया।

काफी आगे बढ़ने पर सहसा समुद्र का सीना फाड़कर जैसे दो सूर्य उदय हुए।

और डॉन द्वारा संकेत देते ही व्हेलनुमा पन-

लगभग एक घण्टे बाद डॉन अपने मास्टर ब्लैक ड्रैगन के

यह यूरेनियम हमारे बहुत काम आ सकता है, एजेण्ट जैड! तुम फौरन डेथशिप को निर्देश दो कि वह उस जहाज को हिन्दुस्तान पहुंचने से पहले ही उड़ा ले!
जो आज्ञा महामहिम!

एजेण्ट जैड के जाने के बाद—
हम तुम्हारी दूरदर्शिता से बहुत प्रसन्न हुए डॉन! जल्दी ही हम तुम्हें इस काम का एक तगड़ा इनाम देंगे। अब तुम जा सकते हो!
ओ.के. बॉस!

लेकिन डॉन पलटने के साथ ही अचानक लड़खड़ाया—
आह!
क्या हुआ?

आह! मेरे सीने में बहुत दर्द हो रहा है बॉस!
ओह! ठहरो मैं तुम्हें अभी डिस्पेन्सरी भेजने का प्रबन्ध करता हूं!

ब्लैक ईगन ने एक गार्ड को बुलाया—
तुम इसे तुरन्त डिस्पेन्सरी ले जाओ और डॉ. वर्मा से इसका चैकअप कराओ! हरीअप!
बहुत अच्छा महामहिम!

गार्ड डॉन को सहारा देकर कमरे से बाहर ले गया।
उनके जाने के बाद ईगन भी वहां नहीं रुका...

...और प्रोफेसर शर्मा की प्रयोगशाला में जा पहुंचा, जहां प्रोफेसर शर्मा दिन-रात अपने आविष्कार को पूरा करने में जुटे हुए थे।
कहां तक पहुंचे प्रोफेसर?
मुझे विश्वास है महामहिम कि मेरा यह यंत्र और किरणें चार-पांच रोज में पूरी तरह तैयार हो जायेंगी!

गुड! मैं चलता हूं! मेरे विचार से तुम्हें भी कुछ देर आराम कर लेना चाहिए!
जब तक मेरा काम पूरा नहीं हो जाता, तब तक मेरे लिये आराम हराम है महामहिम!

तुम्हारा इरादा निश्चय ही काबिले तारीफ है प्रोफेसर! मैं तुम्हें इसका समय आने पर उचित पुरस्कार दूंगा! ओ. के. गुड नाईट!

जिस समय ब्लैक ड्रैगन प्रोफेसर से विदा लेकर अपने शयन-कक्ष की ओर बढ़ा, उस समय रात आधी से ज्यादा बीत चुकी थी।

उसी रात-
खर्र-र्र-र्र
आज एक ही पहरेदार है राम भइया और वह भी खर्राटे भर रहा है। यदि इस मौके का भी फायदा न उठा सके तो जिन्दगी भर इस कैदखाने से बाहर नहीं निकल सकेंगे।

इस मौके का हम जरूर फायदा उठायेंगे रहीम! बस, अब तुम देखते जाओ!

कहने साथ ही राम झटपट अपने जूते उतारने लगा।
यह तुम क्या कर रहे हो?
खामोश रहो, कहीं पहरेदार जाग गया तो सब गुड़-गोबर हो जायेगा!

जूते निकालने के बाद राम ने उसके तले खोल डाले। तले में एक शक्तिशाली चुम्बक और एक लोहे की छोटी-सी रॉड रखी थी।
???

दोनों चीजों को निकालने के पश्चात् राम ने रॉड के एक सिरे को जो खींचा तो वह एरियल की तरह खिंचता चला गया।
ओह! अब समझा! वास्तव में राम भइया के दिमाग का भी जवाब नहीं! पहरेदार की कमर से चाबी निकालने का यह उपाय तो मैं कभी सपने में भी नहीं सोच सकता था।

चुम्बक को उस लम्बे रॉड से चिपकाने के पश्चात् राम ने वह सिरा पहरेदार की कमर की ओर बढ़ा दिया, जहां उनकी कोठरी की चाबी लटक रही थी।
खर्र-खर्र-खर्र

शीघ्र ही-
चप्प!
वो मारा! बन गया काम!

चुंबक के सहारे चाबी राम के हाथों में आ गई-
तुम बाहर निकलते ही सबसे पहले पहरेदार की गन अपने काबू में करना!
ठीक है!

और जैसे ही राम ने ताला खोला, रहीम बाहर निकलकर पहरेदार पर टूट पड़ा।
कड़ाक
आह!

वार भरपूर था। सैनिक की गर्दन टूटकर एक ओर ढलक गई और रहीम ने उसकी गन को अपने कब्जे में कर लिया।
राम भइया, यहां तक तो सब ठीक हो गया, लेकिन अब...?
अरे मूर्ख, कहा न कि कम से कम बोलो...

...मेरे पीछे-पीछे चले आओ!
लेकिन जैसे ही वे कैदखाने के मुख्य द्वार पर पहुंचे, उन्हें ठिठक जाना पड़ा।
बिना इन्हें खत्म किये बाहर निकलना मुश्किल है।
लेकिन इन्हें खत्म कैसे करोगे? इनकी संख्या चार-पांच मालूम पड़ती है। खाली हाथ इनसे निपटा नहीं जा सकता और गोली चलाना मूर्खता होगी!

अब यह मूर्खता करनी ही होगी। इसके अलावा कोई चारा नहीं। लाओ गन मुझे दो।
एक बार फिर सोच लो राम भइया! फायरिंग की आवाज से सब चौकन्ने हो जायेंगे...

उधर हिन्द महासागर में रात्रि के चौथे पहर यूरेनियम से भरा एक विशाल जहाज एस-50 अपनी मन्थर गति से शनैः-शनैः भारत के बन्दरगाह के निकट होता जा रहा था।

जहाज का क्लोजअप लो और उसका नम्बर देखो। बिना पुष्टि किये उस पर आक्रमण करना मूर्खता होगी!
ठीक कहते हो!

स्क्रीन के सामने बैठे व्यक्ति द्वारा एक बटन दबाते ही जहाज क्लोज-अप में आ गया।
गुड! वह एस-50 ही है, पनडुब्बी को ऊपर उठाने की तैयारी करो!
ओ.के.
S 50

कुछ ही क्षणों बाद वह विशाल ह्वेल समुद्र का सीना चीरकर बाहर निकल आयी।
आश्चर्य है! जहाज पर कोई हल-चल दिखाई नहीं दे रही! बिल्कुल शान्ति छाई हुई है।
S50

शायद सब सो रहे होंगे, मौका अच्छा है, हमें तुरन्त उसे अपने कब्जे में ले लेना चाहिए।
ठीक है, आपरेशन स्टार्ट करो!

और शीघ्र ही-

ह्वेलनुमा पनडुब्बी ने समूचे जहाज को निगल लिया, लेकिन जब ह्वेल-नुमा पनडुब्बी के गार्ड अपहृत जहाज की तलाशी लेने जहाज के भीतर पहुंचे।
हैण्ड्स अप! खबरदार, यदि किसी ने अपने स्थान से हिलने की भी कोशिश की तो भून कर रख दिया जायेगा!
ओह! सैनिक! यानी हमें जाल में फांसने के लिये ही यह चाल चली गई।

कर्नल शेरसिंह, आप सैनिकों के साथ पूरी पनडुब्बी को अपने कब्जे में ले लीजिए और एक-एक व्यक्ति को गिरफ़्तार कर लीजिये।
यस सर!
जब कर्नल कुछ सैनिकों के साथ जहाज से बाहर निकल गया –
जनरल, मेरे विचार से अब हमें देर न करके इनके कन्ट्रोल रूम में पहुंचना चाहिये, ताकि योजनानुसार आगे की कार्यवाही पूरी की जा सके!
आप ठीक कहते हैं मि० मुखर्जी!
कैप्टन राघव, आप इनमें से एक को छोड़कर बाकी सबको बांध दीजिये! हरीअप!
यस सर!
कैप्टन राघव और कुछ सैनिकों ने मिलकर आनन-फानन में नम्बर फोर वन को छोड़कर अन्य सभी को रस्सियों से जकड़ दिया।
मिस्टर, अब तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम हमें चुपचाप अपने कन्ट्रोल रूम में ले चलो, जहां से तुम अपने मुख्य स्टेशन से सम्पर्क करते हो!
बचने का कोई चारा न देख एजेण्ट फोर वन चुपचाप उन्हें लेकर कन्ट्रोल रूम की तरफ चल पड़ा।
उफ! सपने में भी मुझे इतने बड़े धोखे की उम्मीद नहीं थी!
इधर कर्नल शेरसिंह के नेतृत्व में सैनिकों ने शीघ्र ही ब्लैक-ड्रैगन के सभी आदमियों को गिरफ़्तार कर पूरी पनडुब्बी पर अपना कब्जा कर लिया।
शाबाश! इन सबकी भी मुश्कें कस दो!
और जब एजेण्ट फोर वन चीफ मुखर्जी, जनरल और बाकी सैनिकों को लेकर कन्ट्रोल रूम में पहुंचा, तब तक वहां भी सैनिक अपना कब्जा कर चुके थे।
चलो, अपने स्टेशन को सूचना भेजो की तुम लोगों ने यूरेनियम से लदे जहाज का सफलतापूर्वक अपहरण कर लिया है और अब स्टेशन की ओर बढ़ रहे हो।
ल... ल... लेकिन!

तड़ाक्
आह!
लेकिन-वेकिन कुछ नहीं! जैसा हम कहते हैं, वैसा करो, वरना तुम्हारी खाल उतार ली जायेगी!

और फोर वन भयभीत हो वैसा ही करने पर मजबूर हो गया।
हैलो-हैलो स्टेशन जीरो, नम्बर फोर-वन कालिंग-हैलो-!

शीघ्र ही सम्पर्क जुड़ा और सामने लगी टी. वी. स्क्रीन पर एक व्यक्ति की आकृति उभरी।
यस एजेण्ट फोर वन, रिपोर्ट!
हमने यूरेनियम से भरे जहाज एस-50 का अपहरण कर लिया है और इस समय स्टेशन की ओर ही बढ़ रहे हैं!

गुड! तुम्हें द्वार खुला मिलेगा। मैं यह खुशखबरी महामहिम को भी दिये देता हूं!
इसी के साथ सम्बन्ध विच्छेद हो गया और स्क्रीन पर अंधेरा छा गया।

शाबाश! अब तुम अपनी पनडुब्बी को अपने स्टेशन जीरो की ओर ले चलो!
इसमें बहुत खतरा है। यदि ब्लैक ईगल को इस बात की जरा भी भनक पड़ गई कि यूरेनियम की जगह, जहाज में सैनिक हैं तो वह मार्ग में ही पनडुब्बी को उड़ा देगा!

ज्यादा चालाक बनने की कोशिश मत करो मिस्टर। बस वैसा ही करो जैसा हम कह रहे हैं। बाकी के खतरे से हम स्वयं निपट लेंगे।

और नम्बर फोर वन मजबूर हो उनकी आज्ञा का पालन करने में जुट गया।

कुछ ही क्षणों पश्चात ह्वेलनुमा पनडुब्बी तीव्र गति से स्टेशन की ओर बढ़ी चली जा रही थी।

इधर स्टेशन जीरो में फायरिंग की आवाज गूंजते ही अफरा-तफरी मच गयी और तुरन्त ही खतरे का सायरन भी बज उठा।

तभी दीवारों पर फिट स्पीकरों से घोषणा की जाने लगी।

वह घोषणा राम-रहीम के कानों में भी पड़ी।

इस तरह दोनों न केवल दीवारों पर लगे स्पीकरों को नष्ट करते हुए आगे बढ़े, बल्कि जो भी दुश्मन सामने आता, उसे भी वे अपनी गोलियों का शिकार बना देते।
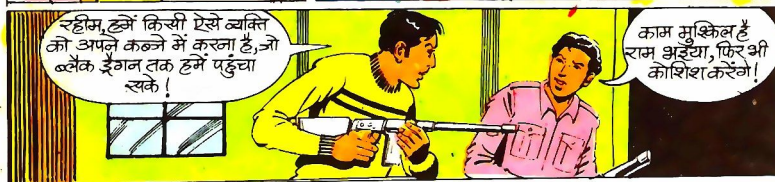
उस समय ब्लैक ईगल गहरी नींद सोया हुआ था, जब एजेण्ट जैड ने उसे जगाकर सारी घटना की सूचना दी।
यह तुम क्या बक रहे हो? कैदखाने से वे कैसे निकल भागे?
इस विषय में तो वहां तैनात पहरेदार ही बता सकता था, लेकिन उन छोकरों ने न केवल उसे ही मार डाला है, बल्कि अब तक बहुत विनाश भी मचा चुके हैं।
ओह! आखिर वही हुआ जिसका मुझे डर था...
...सुनो जैड, मुझे पूरा विश्वास है कि वे दोनों प्रोफेसर शर्मा या मुझ तक पहुंचने की कोशिश करेंगे। तुम ऐसा करो, प्रोफेसर शर्मा और उसकी लड़की को यहां ले आओ और इस कमरे के चारों तरफ मजबूत पहरा बिठा दो। जाओ, जल्दी करो।
जो आज्ञा महामहिम।
इधर राम-रहीम को खोज रहे सैनिकों के एक दस्ते की दृष्टि राम-रहीम पर पड़ी।
वे रहे!
फायर!
सैनिकों ने तुरन्त उन पर फायरिंग की।
तड़-तड़-तड़
धांय-धांय
लेकिन राम-रहीम किसी छलावे की तरह हवा में उछाल भरते हुए...
...एक सुरक्षित स्थान पर सकुशल पहुंचने में सफल हो गये।
रहीम, उनकी तादाद काफी है। अतः गोलियों से काम नहीं चलेगा, हैण्ड ग्रेनेड का प्रयोग करो!
ओ.के. बिग ब्रदर
अगले ही पल रहीम ने एक साथ दो हैण्डग्रेनेड्स के सेफ्टी पिन निकालकर उन्हें सैनिकों पर उछाल दिया।
ओह! दस्ती बम! भागो!
बचो!
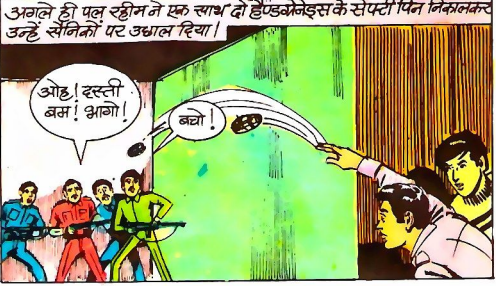
लेकिन न कोई सैनिक भाग पाया और न बच सका।
धुड़म-धड़ाम
धड़ाम

इधर एजेण्ट जैड प्रोफेसर शर्मा और उनकी बेटी को लेकर ब्लैक ड्रैगन के पास पहुंचा।
महामहिम, इतनी रात गये आपने हमें क्यों बुलाया?
दो जासूस छोकरे हमारी कैद से आजाद हो गये हैं प्रोफेसर, और वे हमें काफी नुकसान पहुंचा सकते हैं। हो सकता है वे तुम्हें भी मारने का प्रयत्न करें, इसलिये एहतियात के तौर पर तुम्हें यहां बुला लिया है...

...एजेण्ट जैड, क्या तुमने बाहर सख्त पहरा बिठा दिया है!
अभी नहीं महामहिम क्योंकि सारे सैनिक उन्हीं दोनों शैतानों की खोज में लगे हैं।

अरे मूर्ख, तो खड़े-खड़े मेरा मुंह क्या देख रहे हो। जल्दी जाओ और सैनिकों की एक पूरी टुकड़ी इस कमरे के चारों तरफ बिठा दो। वे शैतान छोकरे किसी भी हालत में इस कमरे तक नहीं पहुंचने चाहियें!
ज...जी!
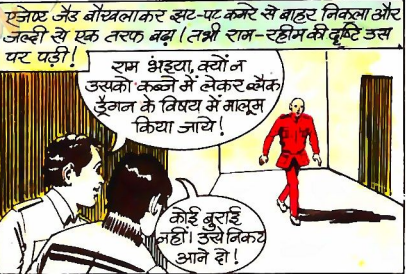
एजेण्ट जैड बौखलाकर झट-पट कमरे से बाहर निकला और जल्दी से एक तरफ बढ़ा। तभी राम-रहीम की दृष्टि उस पर पड़ी।
राम भइया, क्यों न उसको कब्जे में लेकर ब्लैक ड्रैगन के विषय में मालूम किया जाये!
कोई बुराई नहीं। उसे निकट आने दो!

और जैसे ही एजेण्ट जैड उनके निकट से गुजरा-
आह! गड़प-गड़प!

जैसा हम कहते हैं, वैसा ही कीजिये प्रोफेसर, वरना हमें मजबूरन आपके साथ भी दूसरा व्यवहार करना पड़ेगा!
मजबूरन प्रोफेसर को ब्लैक ड्रैगन की मुश्कें कसनी पड़ीं।
अब ठीक है। अब तुम हमारे आगे-आगे चलोगे ब्लैक ड्रैगन और हमें अपने इस अड्डे से बाहर निकालने में हमारी मदद करोगे, चलो!
और आप दोनों भी हमारे साथ चलिये प्रोफेसर!

लेकिन तभी डॉन कमरे के द्वार पर प्रकट हुआ।
ठहरो छोकरो, अब तुम्हारा काम खत्म हुआ। यदि अपनी जिन्दगी चाहते हो तो अपनी अपनी गन जमीन पर फेंक दो।
ओह, डॉन!
आहा! डॉन!

तुम्हें भी खुश होने की जरूरत नहीं ब्लैक ड्रैगन, क्योंकि मैं तुम्हारा साथी डॉन नहीं, बल्कि अमेरिका सरकार का एक एजेण्ट ट्रिपल थ्री उर्फ टोरा हूं!
कहने के साथ ही डॉन ने अपने चेहरे से डॉन का मास्क हटा दिया।
हा-हा-हा-क्यों ब्लैक ड्रैगन उर्फ शम्भु दयाल, क्या मुझे पहचाना नहीं?
ओह, तुम!
क्या? डॉ॰ शम्भु दयाल!

ल... लेकिन... त... तुम यहां तक कैसे आ पहुंचे?
ठहरो, पहले तुम्हारे चेहरे से नकाब उलट दूं, फिर सारा किस्सा बताऊंगा!

और उसने ब्लैक ड्रैगन के चेहरे से नकाब हटा दी। अब वास्तव में सबके सामने डॉक्टर शम्भु दयाल खड़ा था।
अब बताओ तुम यहां तक कैसे पहुंचे और डॉन कहां है?
डॉन तो कभी का मेरे हाथों मर कर समुद्री मछलियों का भोजन बन चुका है...

...तुम खुश हो रहे थे कि हमारे देश को मूर्ख बनाने के साथ-साथ पूरे विश्व पर कब्जा कर लोगे, लेकिन अफसोस कि तुम अपनी चाल में कामयाब नहीं हो सके...
...हमारे देश को पहले ही तुम पर शक हो गया था कि तुम केवल दिखावे के लिये काम कर रहे हो, जबकि वास्तविकता यह थी कि तुम हमारी सरकार से मिला पैसा अपने इस अड्डे के निर्माण में खर्च कर रहे थे...

...और जब हमारी सीक्रेट सर्विस को इस बात की गुप्त सूचना मिली कि तुम भारत जा रहे हो और तुम्हारी नीयत प्रोफेसर शर्मा को उड़ाने की है तो हमारे विभाग के चीफ ने एक जबरदस्त योजना बनाई, जिसके तहत मैं भी तुम्हारे पीछे-पीछे भारत आ पहुंचा...

...भारत पहुंचकर जब मुझे तुम्हारी योजना का पता चला तो मैं भी उस जहाज में सवार हो गया, जिसमें तुमने प्रोफेसर को यात्रा करने के लिये कहा था...

...तब मेरी दृष्टि में तुम्हारे साथी डॉन के साथ-साथ राम और रहीम भी आये। मैंने तुम तक पहुंचने की एक योजना बना डाली...
किसी तरह डॉन को अपने कब्जे में करना होगा!

...फिर मौका देखकर मैंने डॉन को खत्म कर दिया...
धुप्प-धुप्प
आह!
...और उसकी लाश समुद्र में फेंक दी...
...फिर मैं डॉन के चेहरे का मास्क चढ़ाकर डॉन बन बैठा...
अब ठीक है, ब्लैक ड्रैगन उर्फ शम्भु तक पहुंचने में अब कोई कठिनाई नहीं होगी!
...उसके बाद जहाज का तुम्हारे डेथशिप, यानी ह्वेलनुमा पनडुब्बी ने अपहरण किया, लेकिन बदकिस्मती से मुझे तुम्हारे अड्डे पर जाने का मौका नहीं मिला और तुम्हारे आदेश के मुताबिक मुझे वापस शहर लौटना पड़ा...
...लेकिन डॉन को मारने से पहले उससे उसके निवास स्थान आदि के बारे में मैंने सारी जानकारी हासिल कर ली थी, इसलिए मुझे उसके निवास स्थान पर पहुंचकर वहां रहने में कोई कठिनाई नहीं आई...
...और मैं उस दिन से ऐसे मौके की तलाश में रहने लगा, जब मैं तुम्हारे अड्डे में पहुंच सकूं और संयोग से वह दिन जल्दी ही आ गया और मैं यूरेनियम के जहाज की सूचना देने स्वयं यहां आ पहुंचा...
...अब बाकी का किस्सा तो तुम जानते ही हो! हा-हा-हा-!
तुम वास्तव में बहुत चालाक हो एजेन्ट टोरा...

...और मुझे तुम जैसे ही आदमी पसंद हैं। सुनो, यदि तुम मेरे साथ काम करने के लिये तैयार हो जाओ तो मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी करने के लिये तैयार हूं।
मैं तुम्हारी तरह देश का गद्दार नहीं बन सकता डॉक्टर और किसी भी कीमत पर नहीं...
...चीफ का आदेश है कि मैं तुम्हें और प्रोफेसर शर्मा को अपने देश के हवाले करूं। अतः मैं वही करूंगा...

...उसके बाद न केवल तुम्हारा यह अनोखा स्टेशन हमारे देश के काम आयेगा, बल्कि तुम दोनों के आविष्कार भी हमारे देश के लिये महान् उपलब्धियां होंगी।
नहीं, तुम मेरे जीते-जी ऐसा हरगिज नहीं कर सकते...
कहकर डॉक्टर शम्भु भयानक अंदाज में टेरा की ओर बढ़ा।

वहीं रुक जाओ डॉक्टर, वरना मैं गोली चला दूंगा।
कुत्ते, तब तू भी नहीं बचेगा!

यह राम-रहीम के लिये सुनहरा मौका था।
रहीम, तुम डॉक्टर को सम्भालो, मैं इस जासूस के बच्चे को देखता हूं।
उफ!

रहीम ने भी डॉक्टर को दबोचने में देर नहीं लगाई। वैसे भी हाथ बंधे होने के कारण डॉक्टर शम्भु लाचार था, लेकिन ठीक उसी समय बाहर से भीषण विस्फोटों की आवाजें आने लगीं।
धुड़म्-धड़ाम्
तड़-तड़-तड़-

दरअसल उस समय तक चीफ मुखर्जी और जनरल के नेतृत्व में भारतीय सेना स्टेशन जीरो में प्रवेश कर चुकी थी और ब्लैक ड्रैगन के सैनिकों से टक्कर ले रही थी।

ड्रैगन के आदमी ज्यादा देर तक भारतीय फौज के सामने टिक न सके और उन्होंने हथियार डाल दिये।
इन्हें गिरफ़तार कर लो!

उसके बाद चीफ मुखर्जी, जनरल भण्डारी और कुछ सैनिक स्टेशन जीरो के एक-एक कमरे को छानते हुए जब ब्लैक ड्रैगन के शयन कक्ष में पहुंचे तब तक राम-रहीम टोरा और डॉक्टर शम्भु दयाल को बेहोश करने के बाद हाथ झाड़ रहे थे।
राम बेटे!
आहा! अंकल आप...

मुद्रक : गोयल आफसैट वर्क्स, दिल्ली